काव्यखंड

पुतली में संसार

दुनिया शब्दों के अलावा
और कहाँ बच पाती है आखिरकार

–अशोक वाजपेयी

गुरु नानक

गुरु नानक का जन्म 1469 ई० में तलबंडी ग्राम, जिला लाहौर में हुआ था । इनका जन्म-स्थान 'नानकाना साहब' कहलाता है जो अब पाकिस्तान में है । इनके पिता का नाम कालूचंद खत्री, माँ का नाम तृप्ता और पत्नी का नाम सुलक्षणी था । इनके पिता ने इन्हें व्यवसाय में लगाने का बहुत उद्यम किया, किन्तु इनका मन भक्ति की ओर अधिकाधिक झुकता गया । इन्होंने हिन्दू-मुसलमान दोनों की समान धार्मिक उपासना पर बल दिया । वर्णाश्रम व्यवस्था और कर्मकांड का विरोध करके निर्गुण ब्रह्म की भक्ति का प्रचार किया । गुरुनानक ने व्यापक देशाटन किया और मक्का-मदीना तक की यात्रा की । मुगल सम्राट बाबर से भी इनकी भेंट हुई थी । गुरु नानक ने 'सिख धर्म' का प्रवर्तन किया । गुरुनानक ने पंजाबी के साथ हिंदी में भी कविताएँ कीं । इनकी हिंदी में ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों का मेल है । इनके भक्ति और विनय के पद बहुत मार्मिक हैं । इनके दोहों में जीवन के अनुभव उसी प्रकार गुँथे हैं जैसे कबीर की रचनाओं में, लेकिन इन्होंने उलटबाँसी शैली नहीं अपनाई । इनके उपदेशों के अंतर्गत गुरु की महत्ता, संसार की क्षणभंगुरता, ब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता, नाम जप की महिमा, ईश्वर की सर्वव्यापकता आदि बातें मिलती हैं । इनकी रचनाओं का संग्रह सिखों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने सन् 1604 ई० में किया जो 'गुरु ग्रंथ साहिब' के नाम से प्रसिद्ध हुआ । गुरु नानक की रचनाएँ हैं – 'जपुजी', 'आसादीवार', 'रहिरास' और सोहिला । कहते हैं कि सन् 1539 में इन्होंने 'वाह गुरु' कहते हुए अपने प्राण त्याग दिए ।

निर्गुण निराकार ईश्वर के उपासक गुरुनानक हिंदी की निर्गुण भक्तिधारा के एक प्रमुख कवि हैं । पंजाबी मिश्रित ब्रजभाषा में रचित इनके पद सरल सच्चे हृदय की भक्तिभावना में डूबे उद्‌गार हैं । इन पदों में कबीर की तरह प्रखर सामाजिक विद्रोह-भावना भले ही न दिखाई पड़ती हो, किन्तु धर्म-उपासना के कर्मकांडमूलक सांप्रदायिक स्वरूप की आलोचना तथा सामाजिक भेदभाव के स्थान पर प्रेम के आधार पर सहज सद्‌भाव की प्रतिष्ठा दिखलाई पड़ती है । नानक के पद वास्तव में प्रेम एवं भक्ति के प्रभावशाली मधुर गीत हैं । यहाँ नानक के ऐसे दो महत्त्वपूर्ण पद प्रस्तुत हैं । प्रथम पद बाहरी वेश-भूषा, पूजा-पाठ और कर्मकांड के स्थान पर सरल सच्चे हृदय से राम-नाम के कीर्तन पर बल देता है, क्योंकि नाम-कीर्तन ही सच्ची स्थायी शांति देकर व्यक्ति को इस दुखमय जीवन के पार पहुँचा पाता है । द्वितीय पद में सुख-दुख में एक समान उदासीन रहते हुए मानसिक दुर्गुणों से ऊपर उठकर अंतःकरण की निर्मलता हासिल करने पर जोर दिया गया है । संत कवि गुरु की कृपा प्राप्त कर इस पद में गोविंद से एकाकार होने की प्रेरणा देता है ।

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ।
बिखु खावै बिखु बोलै बिनु नावै निहफलु मटि भ्रमना ॥
पुसतक पाठ व्याकरण बखाणैं संधिआ करम निकाल करै ।
बिनु गुरसबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु अरुझि मरै ॥
डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथ गवनु अति भ्रमनु करै ।
रामनाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नाम सु पारि परै ॥
जटा मुकुट तन भसम लगाई बसन छोडि तन नगन भया ।
जेते जीअ जंत जल थल महीअल जत्र तत्र तू सरब जीआ ॥
गुरु परसादि राखिले जन कोउ हरिरस नानक झोलि पीआ ।

जो नर दुख में दुख नहिं मानै

जो नर दुख में दुख नहिं मानै ।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ॥
नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना ।
हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना ॥
आसा मनसा सकल त्यागि कै जग तें रहै निरासा ।
काम क्रोध जेहि परसे नाहिन तेहिं घट ब्रह्म निवासा ॥
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्हीं तिन्ह यह जुगति पिछानी ।
नानक लीन भयो गोबिंद सो ज्यों पानी सँग पानी ॥

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि किसके बिना जगत् में यह जन्म व्यर्थ मानता है ?
2. वाणी कब विष के समान हो जाती है ?
3. नाम-कीर्तन के आगे कवि किन कर्मों की व्यर्थता सिद्ध करता है ?
4. प्रथम पद के आधार पर बताएँ कि कवि ने अपने युग में धर्म-साधना के कैसे-कैसे रूप देखे थे ?
5. हरिरस से कवि का अभिप्राय क्या है ?
6. कवि की दृष्टि में ब्रह्म का निवास कहाँ है ?
7. गुरु की कृपा से किस युक्ति की पहचान हो पाती है ?
8. **व्याख्या करें :**
   (क) राम नाम बिनु अरुझि मरै ।
   (ख) कंचन माटी जानै ।
   (ग) हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना ।
   (घ) नानक लीन भयो गोविंद सो, ज्यों पानी संग पानी ।
9. आधुनिक जीवन में उपासना के प्रचलित रूपों को देखते हुए नानक के इन पदों की क्या प्रासंगिकता है ? अपने शब्दों में विचार करें ।

कविता के आस-पास

1. गुरुनानक के इन पदों से मिलते-जुलते कबीर के दो पद एकत्र करें ।
2. नाम महिमा का बखान करने वाले सगुण भक्त कवियों के कुछ वचन एकत्र कर विचार करें कि दोनों के भावों में कहाँ तक समानता है ?
3. मध्ययुग के निर्गुण संत कवियों की काल-निर्देश करते हुए एक क्रमवार सूची तैयार करें ।
4. 'गोधूलि भाग-1' में पठित रैदास के पदों के साथ गुरुनानक के इन पदों की तुलना करते हुए एक टिप्पणी लिखें ।

भाषा की बात

1. **पद में प्रयुक्त निम्नांकित शब्दों के मानक आधुनिक रूप लिखें –**
   बिरथे, बिखु, निहफलु, मटि, संधिआ, करम, गुरसबद, तीरथभगवनु, महीअल, सरब, माटी, अस्तुति, नियारो, जुगति, पिछानी
2. दोनों पदों में प्रयुक्त सर्वनामों को चिह्नित करें और उनके भेद बताएँ ।

3. **निम्नलिखित शब्दों के वाक्य-प्रयोग करते हुए लिंग-निर्णय करें –**
जग, मुक्ति, धोती, जल, भस्म, कंचन, जुगति, स्तुति

4. **निम्नलिखित विशेषणों का स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें –**
व्यर्थ, निष्फल, नग्न, सर्व, न्यारा, सकल

शब्द निधि

बिरथे	:	व्यर्थ ही
जगि	:	संसार में
बिखु	:	विष
नावै	:	नाम
निहफलु	:	निष्फल
मटि	:	मति, बुद्धि
संधिआ	:	संध्या, संध्याकालीन उपासना
गुरसबद	:	गुरु का उपदेश
अरुझि	:	उलझकर
डंड	:	दंड (साधु लोग जिसे वैराग्य के चिह्न के रूप में धारण करते हैं)
सिखा	:	चोटी
सूत	:	जनेऊ
जीअ	:	जीव
जंत	:	जंतु, प्राणी
महीअल	:	महीतल, धरती पर
कंचन	:	सोना
अस्तुति	:	स्तुति, प्रार्थना
निआरो	:	न्यारा, अलग, पृथक
परसे	:	स्पर्श
घट	:	घड़ा (प्रतीकार्थ – देह, शरीर)
जुगति	:	युक्ति, उपाय
पिछानी	:	पहचानी

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

❑❑❑

रसखान

रसखान के जीवन के संबंध में सही सूचनाएँ प्राप्त नहीं होतीं, परंतु इनके ग्रंथ 'प्रेमवाटिका' (1610 ई०) में यह संकेत मिलता है कि ये दिल्ली के पठान राजवंश में उत्पन्न हुए थे और इनका रचनाकाल जहाँगीर का राज्यकाल था । जब दिल्ली पर मुगलों का आधिपत्य हुआ और पठान वंश पराजित हुआ, तब ये दिल्ली से भाग खड़े हुए और ब्रजभूमि में आकर कृष्णभक्ति में तल्लीन हो गए । इनकी रचना से पता चलता है कि वैष्णव धर्म के बड़े गहन संस्कार इनमें थे । यह भी अनुमान किया जाता है कि ये पहले रसिक प्रेमी रहे होंगे, बाद में अलौकिक प्रेम की ओर आकृष्ट होकर भक्त हो गए । 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' से यह पता चलता है कि गोस्वामी विट्ठलनाथ ने इन्हें 'पुष्टिमार्ग' में दीक्षा दी । इनके दो ग्रंथ मिलते हैं – 'प्रेमवाटिका' और 'सुजान रसखान' । 'प्रेमवाटिका' में प्रेम-निरूपण संबंधी रचनाएँ हैं और 'सुजान रसखान' में कृष्ण की भक्ति संबंधी रचनाएँ ।

रसखान ने कृष्ण का लीलागान पदों में नहीं, सवैयों में किया है । रसखान सवैया छंद में सिद्ध थे । जितने सरस, सहज, प्रवाहमय सवैये रसखान के हैं, उतने शायद ही किसी अन्य हिंदी कवि के हों । रसखान का कोई सवैया ऐसा नहीं मिलता जो उच्च स्तर का न हो । उनके सवैयों की मार्मिकता का आधार दृश्यों और बाह्यांतर स्थितियों की योजना में है । वहीं रसखान के सवैयों के ध्वनि प्रवाह भी अपूर्व माधुरी में है । ब्रजभाषा का ऐसा सहज प्रवाह अन्यत्र दुर्लभ है । रसखान सूफियों का हृदय लेकर कृष्ण की लीला पर काव्य रचते हैं । उनमें उल्लास, मादकता और उत्कटता तीनों का संयोग है । इनकी रचनाओं से मुग्ध होकर भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा था – ''इन मुसलमान हरिजनन पै, कोटिन हिन्दू वारिये ।''

सम्प्रदायमुक्त कृष्ण भक्त कवि रसखान हिंदी के लोकप्रिय जातीय कवि हैं । यहाँ 'रसखान रचनावली' से कुछ छन्द संकलित हैं – दोहे, सोरठा और सवैया । दोहे और सोरठा में राधा-कृष्ण के प्रेममय युगल रूप पर कवि के रसिक हृदय की रीझ व्यक्त होती है और सवैया में कृष्ण और उनके ब्रज पर अपना जीवन सर्वस्व न्योछावर कर देने की भावमयी विदग्धता मुखरित है ।

प्रेम-अयनि श्री राधिका

प्रेम–अयनि श्री राधिका, प्रेम–बरन नँदनंद ।
प्रेम–बाटिका के दोऊ, माली–मालिन–द्वन्द्व ।।
मोहन छबि रसखानि लखि अब दृग अपने नाहिं ।
अँचे आवत धनुस से छूटे सर से जाहिं ।।
मो मन मानिक लै गयो चितै चोर नँदनंद ।
अब बेमन मैं का करूँ परी फेर के फंद ।।
प्रीतम नन्दकिशोर, जा दिन तें नैननि लग्यौ ।
मन पावन चितचोर, पलक ओट नहिं करि सकौं ।।

करील के कुंजन ऊपर वारौं

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहुँ सिद्धि नवोनिधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारौं ।।
रसखानि कबौं इन आँखिन सौं ब्रज के बनबाग तड़ाग निहारौं ।
कोटिक रौ कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ।।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि ने माली-मालिन किन्हें और क्यों कहा है ?
2. द्वितीय दोहे का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें ।
3. कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है ? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें ।
4. सवैये में कवि की कैसी आकांक्षा प्रकट होती है ? भावार्थ बताते हुए स्पष्ट करें ।
5. **व्याख्या करें :**
   (क) मन पावन चितचोर, पलक ओट नहिं करि सकौं ।
   (ख) रसखानि कबौं इन आँखिन सौं ब्रज के बनबाग तड़ाग निहारौं ।

कविता के आस-पास

1. हिंदी के मध्ययुगीन प्रमुख मुसलमान कवियों की काल-क्रम से सूची बनाएँ ।
2. रसखान रचनावली पुस्तकालय से उपलब्ध कर उसमें 'प्रेमवाटिका' नामक ग्रंथ के दोहे पढ़कर प्रेम के संबंध में कवि के विचारों पर एक टिप्पणी लिखें ।
3. 'अष्टछाप' क्या है ? उसकी स्थापना किसने की ? अष्टछाप के कवियों की क्रमवार सूची बनाएँ ।

भाषा की बात

1. **समास-निर्देश करते हुए निम्नलिखित पदों के विग्रह करें –**
   प्रेम-अयनि, प्रेमबरन, नँदनंद, प्रेमबाटिक, माली-मालिन, रसखानि, चितचोर, मनमानिक, बेमन, नवोनिधि, आठहुँसिद्धि, बनबाग, तिहूँपुर
2. **निम्नलिखित के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखें –**
   राधिका, नँदनंद, नैन, सर, आँख, कुंज, कलधौत
3. कविता से क्रियारूपों का चयन करते हुए उनके मूल रूप को स्पष्ट करें ।

शब्द निधि

अयनि	:	गृह, खजाना	**कामरिया**	:	कंबल, कंबली
बरन	:	वर्ण, रंग	**तिहूँपुर**	:	तीनों लोक
दृग	:	आँख	**बिसारौं**	:	विस्मृत कर दूँ, भुला दूँ
अँचे	:	खिंचे	**तड़ाग**	:	तालाब
सर	:	बाण	**कोटिक**	:	करोड़ों
मानिक	:	(माणिक्य) रत्न विशेष	**कलधौत**	:	इन्द्र
चितै	:	देखकर	**वारौं**	:	न्योछावर कर दूँ
लकुटी	:	छोटी लाठी	**कुंजन**	:	बगीचा (कुंज का बहुवचन)

घनानंद

रीतियुगीन काव्य में घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के सिरमौर कवि हैं। इनका जन्म 1689 ई० के आस-पास हुआ और 1739 ई० में वे नादिरशाह के सैनिकों द्वारा मारे गये। ये तत्कालीन मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले के यहाँ मीरमुंशी का काम करते थे। ये अच्छे गायक और श्रेष्ठ कवि थे। किवदंती है कि सुजान नामक नर्तकी को वे प्यार करते थे। विराग होने पर ये वृंदावन चले गये और वैष्णव होकर काव्य रचना करने लगे। सन् 1739 में जब नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया तब उसके सिपाहियों ने मथुरा और वृंदावन पर भी धावा बोला। बादशाह का मीरमुंशी जानकर घनानंद को भी उन्होंने पकड़ा और इनसे जर, जर, जर (तीन बार सोना, सोना, सोना) माँगा। घनानंद ने तीन मुट्ठी धूल उन्हें यह कहते हुए दी, 'रज, रज, रज' (धूल, धूल, धूल)। इस पर क्रुद्ध होकर सिपाहियों ने इनका वध कर दिया।

घनानंद 'प्रेम की पीर' के कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रेम की पीड़ा, मस्ती और वियोग सबकुछ है। आचार्य शुक्ल के अनुसार, "प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ है।" वियोग में सच्चा प्रेमी जो वेदना सहता है, उसके चित्त में जो विभिन्न तरंगे उठती हैं, उनका चित्रण घनानंद ने किया है। घनानंद वियोग दशा का चित्रण करते समय अलंकारों, रूढ़ियों का सहारा लेने नहीं दौड़ते, वे बाह्य चेष्टाओं पर भी कम ध्यान देते हैं। वे वेदना के ताप से मनोविकारों या वस्तुओं का नया आयाम, अर्थात् पहले न देखा गया उनका कोई नया रूप-पक्ष देख लेते हैं। इसे ही ध्यान में रखकर शुक्ल जी ने इन्हें 'लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और प्रयोग वैचित्र्य' का ऐसा कवि कहा जैसे कवि उनके पौने दो सौ वर्ष बाद छायावाद काल में प्रकट हुए।

घनानंद की भाषा परिष्कृत और शुद्ध ब्रजभाषा है। इनके सवैया और घनाक्षरी अत्यंत प्रसिद्ध हैं। घनानंद के प्रमुख ग्रंथ हैं - 'सुजानसागर', 'विरहलीला', 'रसकेलि बल्ली' आदि।

रीतिकाल के शास्त्रीय युग में उन्मुक्त प्रेम के स्वच्छंद पथ पर चलने वाले महान प्रेमी कवि घनानंद के दो सवैये यहाँ प्रस्तुत हैं। ये छंद उनकी रचनावली 'घनआनँद' से लिए गए हैं। प्रथम छंद में कवि जहाँ प्रेम के सीधे, सरल और निश्छल मार्ग की प्रस्तावना करता है, वहीं द्वितीय छंद में मेघ की अन्योक्ति के माध्यम से विरह-वेदना से भरे अपने हृदय की पीड़ा को अत्यंत कलात्मक रूप में अभिव्यक्ति देता है। घनानंद के इन छंदों से भाषा और अभिव्यक्ति कौशल पर उनके असाधारण अधिकार की भी अभिव्यक्ति होती है।

अति सूधो सनेह को मारग है

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं ।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झझुकैं कपटी जे निसाँक नहीं ।।
'घनआनँद' प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरौ आँक नहीं ।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं ।।

मो अँसुवानिहिं लै बरसौ

परकाजहि देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ ।
निधि-नीर सुधा की समान करौ सबही बिधि सज्जनता सरसौ ।।
'घनआनँद' जीवनदायक हौ कछू मेरियौ पीर हिएँ परसौ ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन मो अँसुवानिहिं लै बरसौ ।।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि प्रेममार्ग को 'अति सूधो' क्यों कहता है ? इस मार्ग की विशेषता क्या है ?
2. 'मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं' से कवि का क्या अभिप्राय है ?
3. द्वितीय छंद किसे संबोधित है और क्यों ?
4. परहित के लिए ही देह कौन धारण करता है ? स्पष्ट कीजिए।
5. कवि कहाँ अपने आँसुओं को पहुँचाना चाहता है और क्यों ?
6. व्याख्या करें –
   (क) यहाँ एक तैं दूसरौ आँक नहीं
   (ख) कछू मेरियौ पीर हिएँ परसौ

कविता के आस-पास

1. घनानंद रीतिमुक्त धारा के कवि हैं। इस धारा के अन्य कवियों की सूची अपने शिक्षक की सहायता से बनाइये और इस धारा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ भी स्पष्ट कीजिए।
2. कवि सुजान कहकर किसे संबोधित करता है ? शिक्षक से मालूम करें।
3. सूफी कवियों से घनानंद की क्या समानता है ? शिक्षक की सहायता से मालूम कीजिए।

भाषा की बात

1. **निम्नलिखित शब्द कविता में संज्ञा अथवा विशेषण के रूप में प्रयुक्त हैं। इनके प्रकार बताएँ –**
   सूधो, मारग, नेकु, बाँक, कपटी, निसाँक, पाटी, जथारथ, जीवनदायक, पीर, हियें, बिसासी
2. कविता में प्रयुक्त अव्यय पदों का चयन करें और उनका अर्थ भी बताएँ।
3. **निम्नलिखित के कारक स्पष्ट करें –**
   सनेह को मारग, प्यारे सुजान, मेरियौ पीर, हियें, अँसुवानिहिं, मो

शब्द निधि

नेकु	:	तनिक भी	**परजन्य**	:	बादल
सयानप	:	चतुराई	**सुधा**	:	अमृत
बाँक	:	टेढ़ापन	**सरसौ**	:	रस बरसाओ
आपन पौ	:	अहंकार, अभिमान	**परसौ**	:	स्पर्श करो
झझुकें	:	झिझकते हैं	**बिसासी**	:	विश्वासी
निसाँक	:	शंकामुक्त	**मन**	:	माप-तौल का एक पैमाना
आँक	:	अंक, चिह्न	**छटाँक**	:	माप-तौल का एक छोटा पैमाना

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

प्रेमघन जी भारतेन्दु युग के महत्त्वपूर्ण कवि थे । उनका जन्म 1855 ई० में मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ और निधन 1922 ई० में। वे काव्य और जीवन दोनों क्षेत्रों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को अपना आदर्श मानते थे । वे निहायत कलात्मक एवं अलंकृत गद्य लिखते थे । उन्होंने भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया था । 1874 ई० में उन्होंने मिर्जापुर में 'रसिक समाज' की स्थापना की । उन्होंने 'आनंद कादंबिनी' मासिक पत्रिका तथा 'नागरी नीरद' नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन किया । वे साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन के सभापति भी रहे । उनकी रचनाएँ 'प्रेमघन सर्वस्व' नाम से संगृहीत हैं ।

प्रेमघन जी निबंधकार, नाटककार, कवि एवं समीक्षक थे । 'भारत सौभाग्य', 'प्रयाग रामागमन' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं । उन्होंने 'जीर्ण जनपद' नामक एक काव्य लिखा जिसमें ग्रामीण जीवन का यथार्थवादी चित्रण है । प्रेमघन ने काव्य-रचना अधिकांशतः ब्रजभाषा और अवधी में की, किंतु युग के प्रभाव के कारण उनमें खड़ी बोली का व्यवहार और गद्योन्मुखता भी साफ दिखलाई पड़ती है । उनके काव्य में लोकोन्मुखता एवं यथार्थ-परायणता का आग्रह है । उन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता की चेतना को अपना सहचर बनाया एवं साम्राज्यवाद तथा सामंतवाद का विरोध किया ।

'प्रेमघन सर्वस्व' से संकलित दोहों का यह गुच्छ 'स्वदेशी' शीर्षक के अंतर्गत यहाँ प्रस्तुत है । इन दोहों में नवजागरण का स्वर मुखरित है । दोहों की विषयवस्तु और उनका काव्य-वैभव इसके शीर्षक को सार्थकता प्रदान करते हैं । कवि की चिंता और उसकी स्वरभंगिमा आज कहीं अधिक प्रासंगिक है ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

स्वदेशी

सबै बिदेसी वस्तु नर, गति रति रीत लखात ।
भारतीयता कछु न अब, भारत म दरसात ।।1।।

मनुज भारती देखि कोउ, सकत नहीं पहिचान ।
मुसल्मान, हिंदू किधौं, कै हैं ये क्रिस्तान ।।2।।

पढ़ि विद्या परदेस की, बुद्धि विदेसी पाय ।
चाल-चलन परदेस की, गई इन्हैं अति भाय ।।3।।

ठटे बिदेसी ठाट सब, बन्यो देस बिदेस
सपनेहूँ जिनमें न कहुँ, भारतीयता लेस ।।4।।

बोलि सकत हिंदी नहीं, अब मिलि हिंदू लोग ।
अंगरेजी भाखन करत, अंगरेजी उपभोग ।।5।।

अंगरेजी बाहन, बसन, वेष रीति औ नीति ।
अंगरेजी रुचि, गृह, सकल, बस्तु देस विपरीत ।।6।।

हिन्दुस्तानी नाम सुनि, अब ये सकुचि लजात ।
भारतीय सब वस्तु ही, सों ये हाय घिनात ।।7।।

देस नगर बानक बनो, सब अंगरेजी चाल ।
हाटन मैं देखहु भरा, बसे अंगरेजी माल ।।8।।

जिनसों सम्हल सकत नहिं तनकी, धोती ढीली-ढाली ।
देस प्रबंध करिहिंगे ये यह, कैसी खाम खयाली ।।9।।

दास-वृत्ति की चाह चहूँ दिसि चारहु बरन बढ़ाली ।
करत खुशामद झूठ प्रशंसा मानहुँ बने डफाली ।।10।।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
2. कवि को भारत में भारतीयता क्यों नहीं दिखाई पड़ती ?
3. कवि समाज के किस वर्ग की आलोचना करता है और क्यों ?
4. कवि नगर, बाजार और अर्थव्यवस्था पर क्या टिप्पणी करता है ?
5. नेताओं के बारे में कवि की क्या राय है ?
6. कवि ने 'डफाली' किसे कहा है और क्यों ?
7. **व्याख्या करें -**
   (क) मनुज भारती देखि कोउ, सकत नहीं पहिचान ।
   (ख) अंग्रेजी रुचि, गृह, सकल बस्तु देस विपरीत ।
8. आपके मत से स्वदेशी की भावना किस दोहे में सबसे अधिक प्रभावशाली है ? स्पष्ट करें ।

कविता के आस-पास

1. नवजागरण के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी लें और एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें ।
2. भारतेंदु हिंदी नवजागरण के अग्रदूत थे । इस संबंध में अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र के साथ प्रेमघन के संबंधों के बारे में भारतेंदु युग पर लिखी पुस्तकों की सहायता लेकर जानकारी प्राप्त करें ।
4. 'स्वदेशी' शीर्षक के अंतर्गत रखी जाने योग्य भारतेंदु युग के कवियों की कुछ रचनाएँ एकत्र कीजिए ।
5. विद्यालय के पुस्तकालय से रामचंद्र शुक्ल का निबंध 'प्रेमघन की छाया स्मृति' खोजकर पढ़ें और शिक्षक एवं मित्रों से चर्चा करें ।

भाषा की बात

1. **निम्नांकित शब्दों से विशेषण बनाएँ –**
   रुचि, देस, नगर, प्रबंध, खयाल, दासता, झूठ, प्रशंसा
2. **निम्नांकित शब्दों का लिंग-निर्णय करते हुए वाक्य बनाएँ –**
   चाल-चलन, खामखयाली, खुशामद, माल, वस्तु, वाहन, रीत, हाट, दासवृत्ति, बानक
3. कविता से संज्ञा पदों का चुनाव करें और उनके प्रकार भी बताएँ ।

शब्द निधि

गति : स्वभाव
रति : लगाव
रीत : पद्धति
मनुज भारती : भारतीय मनुष्य
क्रिस्तान : क्रिश्चियन, अंग्रेज
बसन : वस्त्र
बानक : बाना, वेशभूषा
खामखयाली : कोरी कल्पना
चारहु बरन : चारों वर्णों में
डफाली : डफ बजानेवाला, बाजा बजानेवाला

❑❑❑

सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 में अलमोड़ा जिले के रमणीय स्थल कौसानी (उत्तरांचल) में हुआ था । जन्म के छह घंटे बाद ही माता सरस्वती देवी का देहान्त हो गया । पिता गंगादत्त पंत कौसानी टी स्टेट में एकाउटेंट थे । पंतजी की प्राथमिक शिक्षा गाँव में हुई और फिर बनारस से उन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा पायी । वे कुछ दिनों तक कालाकांकर राज्य में भी रहे । उसके बाद आजीवन वे इलाहाबाद में रहे । 29 दिसंबर 1977 ई० में उनका निधन हो गया ।

पंतजी का आरंभिक काव्य प्रकृति प्रेम और शिशु सुलभ जिज्ञासा को लेकर प्रकट हुआ । उनकी आरंभिक रचनाएँ प्रकृति और सौंदर्य के प्रेमी कवि की संवेदनशील अभिव्यक्तियों से परिपूर्ण हैं ।

पंतजी प्रवृत्ति से छायावादी हैं, परंतु उनके विचार उदार मानवतावादी हैं । उन्होंने प्रसाद और निराला के समान छंदों और शब्द योजना में नवीन प्रयोग किए । पंतजी की प्रतिभा कलात्मक सूझ से सम्पन्न है, अतः उनकी रचनाओं में एक विलक्षण मृदुता और सौष्ठव मिलता है । युगबोध के अनुसार अपनी काव्यभूमि का विस्तार करते रहना पंत की काव्य-चेतना की विशेषता है । वे प्रारंभ में प्रकृति सौंदर्य से अभिभूत हुए, फिर मानव सौंदर्य से । मानव सौंदर्य ने उन्हें समाजवाद की ओर आकृष्ट किया । समाजवाद से वे अरविन्द दर्शन की ओर प्रवृत्त हुए । वे मानवतावादी कवि थे, जो मानव इतिहास के नित्य बिकास में विश्वास करते थे । वे अतिवादिता एवं संकीर्णता के घोर विरोधी रहे । उनका अंतिम काव्य 'लोकायतन' है जो उनके परिपक्व चिंतन को समेट देता है । उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं - 'उच्छ्वास', 'पल्लव', 'वीणा', 'ग्रंथि', 'गुंजन', 'युगांत', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'स्वर्णधूलि', 'स्वर्णकिरण', 'युगपथ', 'चिदंबरा' आदि । पंतजी ने नाटक, आलोचना, कहानी, उपन्यास आदि भी लिखा । 'चिदंबरा' पर उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' भी मिला ।

प्रकृति सौंदर्य की कविता के लिए विख्यात कवि की रचनाओं में यह कविता हिंदी की यथार्थवादी कविता के एक नये उन्मेष की तरह है । प्रख्यात छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की यह प्रसिद्ध कविता उनकी कविताओं के संग्रह 'ग्राम्या' से संकलित है । यह कविता आधुनिक हिंदी के उत्कृष्ट प्रगीतों में शामिल की जाती है । अतीत के गरिमा-गान द्वारा अब तक भारत का ऐसा चित्र खींचा गया था जो ऐतिहासिक चाहे जितना रहा हो, वर्तमान को देखते हुए वास्तविक प्रतीत नहीं होता था । धन-वैभव, शिक्षा-संस्कृति, जीवनशैली आदि तमाम दृष्टियों से पिछड़ा हुआ, धुँधला और मटमैला दिखाई पड़ता यह देश हमारा वही भारत है जो अतीत में कभी सभ्य, सुसंस्कृत, ज्ञानी और वैभवशाली रहा था । कवि यहाँ इसी भारत का यथातथ्य चित्र प्रस्तुत करता है ।

भारतमाता

भारतमाता ग्रामवासिनी
खेतों में फैला है श्यामल
धूल-भरा मैला-सा आँचल
गंगा-यमुना में आँसू-जल
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी !

दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग-युग के तम से विषण्ण मन
वह अपने घर में
प्रवासिनी !

तीस कोटि सन्तान नग्न तन,
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्रजन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नत मस्तक
तरु-तल निवासिनी !

स्वर्ण शस्य पर-पद-तल लुंठित,
धरती-सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रन्दन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी !

चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित,
नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित,
आनन श्री छाया-शशि उपमित,
ज्ञान मूढ
गीता प्रकाशिनी !
सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन-मन-भय, भव-तम-भ्रम,
जग-जननी
जीवन-विकासिनी !

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के प्रथम अनुच्छेद में कवि भारतमाता का कैसा चित्र प्रस्तुत करता है ?
2. भारतमाता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई है ?
3. कविता में कवि भारतवासियों का कैसा चित्र खींचता है ?
4. भारतमाता का हास भी राहुग्रसित क्यों दिखाई पड़ता है ?
5. कवि भारतमाता को गीता प्रकाशिनी मानकर भी ज्ञानमूढ़ क्यों कहता है ?
6. कवि की दृष्टि में आज भारतमाता का तप-संयम क्यों सफल है ?
7. **व्याख्या करें –**

   (क) स्वर्ण शस्य पर-पद-तल लुंठित, धरती-सा सहिष्णु मन कुंठित

   (ख) चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित, नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित

कविता के आस-पास

1. भारत अथवा भारतमाता पर लिखी गयी जयशंकर प्रसाद और निराला की कुछ प्रमुख कविताएँ एकत्र कीजिए और स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विद्यालय की गोष्ठी में उनका पाठ कीजिए ।
2. फणीश्वरनाथ रेणु के प्रसिद्ध उपन्यास 'मैला आँचल' का नामकरण इसी कविता से प्रेरित है । शिक्षक से यह मालूम करने की कोशिश करें कि दोनों रचनाओं में क्या समानता है ?
3. पंत छायावादी कवि हैं । अपने शिक्षक से मालूम करें कि छायावाद क्या है और इसके प्रमुख कवि कौन-कौन हैं ?

भाषा की बात

1. कविता के हर अनुच्छेद में विशेषण का संज्ञा की तरह प्रयोग हुआ है । आप उनका चयन करें एवं वाक्य बनाएँ ।
2. **निम्नांकित के विग्रह करते हुए समास स्पष्ट करें –**

   ग्रामवासिनी, गंगा-यमुना, शरदेन्दु, दैन्यजड़ित, तिमिरांकित, वाष्पाच्छादित, ज्ञानमूढ़, तपसंयम, जन-मन-भय, भव-तम-भ्रम
3. कविता से तद्भव शब्दों का चयन करें ।
4. कविता से क्रियापद चुनें और उनका स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें ।

शब्द निधि

श्यामल : साँवला
दैन्य : दीनता, अभाव, गरीबी
जड़ित : स्थिर, चेतनाहीन
नत : झुका हुआ
चितवन : दृष्टि
चिर : पुराना, स्थायी
नीरव : निःशब्द, ध्वनिहीन
तम : अंधकार
विषण्ण : (विषाद से निर्मित विशेषण) विषादमय
प्रवासिनी : विदेशिनी, बेगानी
क्षुधित : भूखा
निरस्त्रजन : निहत्थे लोग
शस्य : फसल
तरु-तल : वृक्ष के नीचे
पर-पद-तल : दूसरों के पाँवों के नीचे
लुंठित : रौंदा जाता हुआ
सहिष्णु : सहनशील
कुंठित : रुका हुआ, रुद्ध, गतिहीन
क्रंदन : रुदन, रोना
अधर : होंठ
स्मित : मुस्कान
शरदेन्दु : शरद ऋतु का चन्द्रमा
भृकुटि : भौंह
तिमिरांकित : अंधकार से घिरा हुआ
नमित : झुका हुआ
वाष्पाच्छादित : भाप से ढँका हुआ
आनन-श्री : मुख की शोभा
शशि-उपमित : चंद्रमा से उपमा दी जानेवाली
स्तन्य : स्तन का दूध

❑❑❑

रामधारी सिंह दिनकर

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 ई० में सिमरिया, बेगूसराय (बिहार) में हुआ और निधन 24 अप्रैल 1974 ई० में। उनकी माँ का नाम मनरूप देवी और पिता का नाम रवि सिंह था। दिनकर जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव और उसके आस-पास हुई। 1928 ई० में उन्होंने मोकामा घाट रेलवे हाई स्कूल से मैट्रिक और 1932 ई० में पटना कॉलेज से इतिहास में बी० ए० ऑनर्स किया। वे एच० ई० स्कूल, बरबीघा में प्रधानाध्यापक, जनसंपर्क विभाग में सब-रजिस्ट्रार और सब-डायरेक्टर, बिहार विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर एवं भागलपुर विश्वविद्यालय में उपकुलपति के पद पर रहे।

दिनकर जी जितने बड़े कवि थे, उतने ही समर्थ गद्यकार भी। उनकी भाषा कुछ भी छिपाती नहीं, सबकुछ उजागर कर देती है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं – 'प्रणभंग', 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'कुरुक्षेत्र', रश्मिरथी', 'नीलकुसुम', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'हारे को हरिनाम' आदि। (काव्य-कृतियाँ) एवं 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर', 'संस्कृति के चार अध्याय', 'काव्य की भूमिका', 'वट पीपल', 'शुद्ध कविता की खोज', 'दिनकर की डायरी' आदि (गद्य कृतियाँ)। दिनकर जी को 'संस्कृति के चार अध्याय' पर साहित्य अकादमी एवं 'उर्वशी' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्हें भारत सरकार की ओर से 'पद्मविभूषण' से भी सम्मानित किया गया था। वे राज्यसभा के सांसद भी रहे।

दिनकर जी उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि हैं। वे भारतेन्दु युग से प्रवहमान राष्ट्रीय भावधारा के एक महत्त्वपूर्ण आधुनिक कवि हैं। कविता लिखने की शुरुआत उन्होंने तीस के दशक में ही कर दी थी, किंतु अपनी संवेदना और भावबोध से वे चौथे दशक के प्रमुख कवि के रूप में ही पहचाने गये। उन्होंने प्रबंध, मुक्तक, गीत-प्रगीत, काव्यनाटक आदि अनेक काव्यशैलियों में सफलतापूर्वक उत्कृष्ट रचनायें प्रस्तुत की हैं। प्रबंधकाव्य के क्षेत्र में छायावाद के बाद के कवियों में उनकी उपलब्धियाँ सबसे अधिक और उत्कृष्ट हैं। भारतीय और पाश्चात्य साहित्य का उनका अध्ययन-अनुशीलन विस्तृत एवं गंभीर है। उनमें इतिहास और सांस्कृतिक परंपरा की गहरी चेतना है और समाज, राजनीति, दर्शन का वैश्विक परिप्रेक्ष्य-बोध है जो उनके साहित्य में अनेक स्तरों पर व्यक्त होता है।

राष्ट्रकवि दिनकर की प्रस्तुत कविता आधुनिक भारत में जनतंत्र के उदय का जयघोष है। सदियों की देशी-विदेशी पराधीनताओं के बाद स्वतंत्रता प्राप्ति हुई और भारत में जनतंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा हुई। जनतंत्र के ऐतिहासिक और राजनीतिक अभिप्रायों को कविता में उजागर करते हुए कवि यहाँ एक नवीन भारत का शिलान्यास सा करता है जिसमें जनता ही स्वयं सिंहासन पर आरूढ़ होने को है। इस कविता का ऐतिहासिक महत्त्व है।

जनतंत्र का जन्म

सदियों की ठंढी-बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

जनता ? हाँ, मिट्टी की अबोध मूरतें वही,
जाड़े-पाले की कसक सदा सहनेवाली,
जब अंग-अंग में लगे साँप हो चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द कहने वाली।

जनता ? हाँ, लम्बी-बड़ी जीभ की वही कसम,
"जनता, सचमुच ही, बड़ी वेदना सहती है।"
"सो ठीक, मगर, आखिर, इस पर जनमत क्या है ?"
"है प्रश्न गूढ़; जनता इस पर क्या कहती है ?"

मानो, जनता हो फूल जिसे एहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;
अथवा कोई दुधमुँही जिसे बहलाने के
जन्तर-मन्तर सीमित हों चार खिलौनों में।

लेकिन, होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढ़ाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है;
जनता की रोके राह, समय में ताव कहाँ ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्त्राब्द का अन्धकार

बीता; गवाक्ष अम्बर के दहके जाते हैं;
यह और नहीं कोई, जनता के स्वप्न अजय
चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते आते हैं।

सबसे विराट जनतंत्र जगत का आ पहुँचा,
तैंतीस कोटि-हित सिंहासन तैयार करो;
अभिषेक आज राजा का नहीं, प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिए तू किसे ढूँढ़ता है मूरख,
मन्दिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में ?
देवता कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ रहे,
देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में।

फावड़े और हल राजदंड बनने को हैं,
धूसरता सोने से शृंगार सजाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि की दृष्टि में समय के रथ का घर्घर-नाद क्या है ? स्पष्ट करें ।
2. कविता के आरंभ में कवि भारतीय जनता का वर्णन किस रूप में करता है ?
3. कवि के अनुसार किन लोगों की दृष्टि में जनता फूल या दुधमुँही बच्ची की तरह है और क्यों ? कवि क्या कहकर उनका प्रतिवाद करता है ?
4. कवि जनता के स्वप्न का किस तरह चित्र खींचता है ?
5. विराट जनतंत्र का स्वरूप क्या है ? कवि किनके सिर पर मुकुट धरने की बात करता है और क्यों ?
6. कवि की दृष्टि में आज के देवता कौन हैं और वे कहाँ मिलेंगे ?
7. कविता का मूल भाव क्या है ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए ?
8. **व्याख्या करें -**

   (क) सदियों की ठंढी-बुझी राख सुगबुगा उठी,
   मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है;

   (ख) हुँकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
   साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है;
   जनता की रोके राह, समय में ताव कहाँ ?
   वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है ।

कविता के आस-पास

1. हिंदी में राष्ट्रकवि का सम्मान किन-किन कवियों को प्राप्त हुआ है ? कौन-से कवि हैं जिन्हें आप राष्ट्रकवि कहना चाहेंगे और क्यों ?
2. दिनकर उत्तर छायावाद के कवि हैं । उत्तर छायावाद क्या है ? बिहार के अन्य उत्तर छायावादी कवियों की सूची शिक्षक की सहायता से बनाएँ ।
3. दिनकर का एक गद्य पाठ बारहवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक 'दिगंत भाग-2' में संकलित है । इस पाठ को उपलब्ध कर पढ़ें एवं अपने मित्रों तथा शिक्षकों से विमर्श करें ।

भाषा की बात

1. **निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –**

   सदी, राख, ताज, सिंहासन, कसक, दर्द, कसम, जनमत, फूल, भूडोल, भृकुटी, काल, तिमिर, नाद, राजप्रासाद, मंदिर

2. **निम्नांकित के लिंग-निर्णय करें –**
   ताव, दर्द, वेदना, कसम, हुँकार, बवंडर, गवाक्ष, जगत, अभिषेक, शृंगार, प्रजा
3. कविता से सामासिक पद चुनें एवं उनके समास निर्दिष्ट करें ।

शब्द निधि

नाद	:	स्वर, ध्वनि
गूढ़	:	रहस्यपूर्ण
भूडोल	:	धरती का हिलना-डोलना, भूकंप
कोपाकुल	:	क्रोध से बेचैन
ताज	:	मुकुट
अब्द	:	वर्ष, साल
गवाक्ष	:	बड़ी खिड़की, दरीचा
तिमिर	:	अंधकार
राजदंड	:	राज्याधिकार, शासन करने का अधिकार
धूसरता	:	मटमैलापन

X X X

सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय'

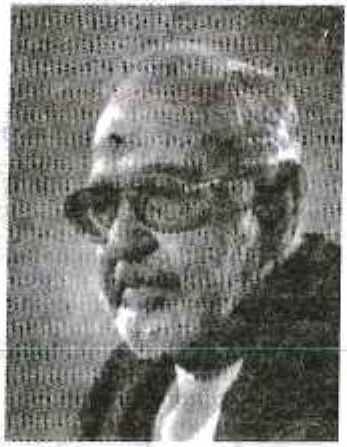

अज्ञेय का जन्म 7 मार्च 1911 ई० में कसेया, कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ, किंतु उनका मूल निवास कर्तारपुर (पंजाब) था। अज्ञेय की माता व्यंती देवी थीं और पिता डॉ० हीरानंद शास्त्री एक प्रख्यात पुरातत्त्वेत्ता थे। अज्ञेय की प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ में घर पर हुई। उन्होंने मैट्रिक 1925 ई० में पंजाब विश्वविद्यालय से, इंटर 1927 ई० में मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से, बी० एससी० 1929 ई० में फोरमन कॉलेज, लाहौर से और एम० ए० (अंग्रेजी) लाहौर से किया।

अज्ञेय बहुभाषाविद् थे। उन्हें संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, फारसी, तमिल आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान था। वे आधुनिक हिंदी साहित्य के एक प्रमुख कवि, कथाकार, विचारक एवं पत्रकार थे। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - **काव्य** : 'भग्नदूत', 'चिंता', 'इत्यलम', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वार', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'सदानीरा' आदि; **कहानी संग्रह** : 'विपथगा', 'जयदोल', 'ये तेरे प्रतिरूप', 'छोड़ा हुआ रास्ता', 'लौटती पगडंडियाँ' आदि; **उपन्यास** : 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'अपने-अपने अजनबी', **यात्रा-साहित्य** : अरे यायावर रहेगा याद', 'एक बूँद सहसा उछली'; **निबंध** : 'त्रिशंकु', 'आत्मनेपद', 'अद्यतन', 'भवंती', 'अंतरा', 'शाश्वती' आदि; **नाटक** : 'उत्तर प्रियदर्शी'; **संपादित ग्रंथ** : 'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक', 'तीसरा सप्तक', 'चौथा सप्तक', 'पुष्करिणी', 'रूपांबरा' आदि। अज्ञेय ने अंग्रेजी में भी मौलिक रचनाएँ कीं और अनेक ग्रंथों के अनुवाद भी किए। वे देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर रहे। उन्हें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, स्रुगा (युगोस्लाविया) का अंतरराष्ट्रीय स्वर्णमाल आदि अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। 4 अप्रैल 1987 ई० में उनका देहांत हो गया।

अज्ञेय हिंदी के आधुनिक साहित्य में एक प्रमुख प्रतिभा थे। उन्होंने हिंदी कविता में प्रयोगवाद का सूत्रपात किया। सात कवियों का चयन कर उन्होंने 'तार सप्तक' को पेश किया और बताया कि कैसे प्रयोगधर्मिता के द्वारा बासीपन से मुक्त हुआ जा सकता है। उनमें वस्तु, भाव, भाषा, शिल्प आदि के धरातल पर प्रयोगों और नवाचरों की बहुलता है।

आधुनिक सभ्यता की दुर्दांत मानवीय विभीषिका का चित्रण करनेवाली यह कविता एक अनिवार्य प्रासंगिक चेतावनी भी है। कविता अतीत की भीषणतम मानवीय दुर्घटना का ही साक्ष्य नहीं है, बल्कि आणविक आयुधों की होड़ में फँसी आज की वैश्विक राजनीति से उपजते संकट की **आशंकाओं** से भी जुड़ी हुई है। आधुनिक कवि अज्ञेय की प्रस्तुत कविता उनकी समग्र कविताओं के संग्रह **'सदानीरा' से** यहाँ संकलित है।

हिरोशिमा

एक दिन सहसा
सूरज निकला
अरे क्षितिज पर नहीं,
नगर के चौक:
धूप बरसी
पर अन्तरिक्ष से नहीं,
फटी मिट्टी से ।

छायाएँ मानव-जन की
दिशाहीन
सब ओर पड़ीं - वह सूरज
नहीं उगा था पूरब में, वह
बरसा सहसा
बीचों-बीच नगर के :
काल-सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों अरे टूट कर
बिखर गये हों
दसों दिशा में ।

कुछ क्षण का वह उदय-अस्त !
केवल एक प्रज्वलित क्षण की
दृश्य सोख लेने वाली दोपहरी ।
फिर ?
छायाएँ मानव जन की
नहीं मिटीं लम्बी हो-हो कर :
मानव ही सब भाप हो गये ।
छायाएँ तो अभी लिखी हैं

झुलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर ।

मानव का रचा हुआ सूरज
मानव को भाप बना कर सोख गया ।
पत्थर पर लिखी हुई यह
जली हुई छाया
मानव की साखी है ।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलने वाला सूरज क्या है ? वह कैसे निकलता है ?
2. छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हैं ? स्पष्ट करें ।
3. प्रज्वलित क्षण की दोपहरी से कवि का आशय क्या है ?
4. मनुष्य की छायाएँ कहाँ और क्यों पड़ी हुई हैं ?
5. हिरोशिमा में मनुष्य की साखी के रूप में क्या है ?
6. व्याख्या करें –
   (क) 'एक दिन सहसा / सूरज निकला'
   (ख) 'काल-सूर्य के रथ के / पहियों के ज्यों अरे टूट कर / बिखर गये हों / दसों दिशा में'
   (ग) 'मानव का रचा हुआ सूरज / मानव को भाप बना कर सोख गया'
7. आज के युग में इस कविता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. हिरोशिमा कहाँ है ? इतिहास में उसकी प्रसिद्धि किसलिए है ? शिक्षक की सहायता से मालूम करें ।
2. जापान को उगते हुए सूरज का देश क्यों कहा जाता है ? कारणों को ध्यान में रखते हुए इस कविता पर टिप्पणी कीजिए ।
3. हिरोशिमा के साथ इसी प्रसंग में जापान के और किस शहर का उल्लेख होता है ? जापान के मानचित्र में इन नगरों को चिह्नित करें ।
4. द्वितीय विश्वयुद्ध में पक्ष-विपक्ष और तटस्थ देशों की सूची बनाएँ । इनमें भारत की स्थिति क्या थी ?

भाषा की बात

1. कविता में प्रयुक्त निम्नांकित शब्दों का कारक स्पष्ट कीजिए –
   क्षितिज, अंतरिक्ष, चौक, मिट्टी, बीचो-बीच, नगर, रथ, गच, छाया
2. कविता में प्रयुक्त क्रियारूपों का चयन करते हुए उनकी काल रचना स्पष्ट कीजिए ।
3. कविता से तद्भव शब्द चुनिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।
4. कविता से संज्ञा पद चुनें और उनका प्रकार भी बताएँ ।
5. निम्नांकित के वचन परिवर्तित कीजिए –
   छायाएँ, पड़ीं, उगा, हैं, पहियों, अरे, पत्थरों, साखी

शब्द निधि

अरे : पहिये की धुरी और परिधि या नेमि को जोड़ने वाले दंड
गच : पत्थर या सीमेंट से बना पक्का धरातल
साखी (साक्षी) : गवाही, सबूत

कुँवर नारायण

कुँवर नारायण का जन्म 19 सितंबर 1927 ई० में लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ था । कुँवर नारायण ने कविता लिखने की शुरुआत सन् 1950 के आस-पास की । उन्होंने कविता के अलावा चिंतनपरक लेख, कहानियाँ और सिनेमा तथा अन्य कलाओं पर समीक्षाएँ भी लिखीं हैं, किंतु कविता उनके सृजन-कर्म में हमेशा मुख्य रही । उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - 'चक्रव्यूह', 'परिवेश : हम तुम', 'अपने सामने', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों' (काव्य संग्रह); 'आत्मजयी' (प्रबंधकाव्य); 'आकारों के आस-पास' (कहानी संग्रह); 'आज और आज से पहले' (समीक्षा); 'मेरे साक्षात्कार' (साक्षात्कार) आदि । कुँवर नारायण जी को अनके पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं - 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'कुमारन आशान पुरस्कार', 'व्यास सम्मान', 'प्रेमचंद पुरस्कार', 'लोहिया सम्मान', 'कबीर सम्मान' आदि ।

कुँवर नारायण पूरी तरह नगर संवेदना के कवि हैं । विवरण उनके यहाँ नहीं के बराबर है, पर वैयक्तिक और सामाजिक ऊहापोह का तनाव पूरी व्यंजकता के साथ प्रकट होता है । आज का समय और उसकी यांत्रिकता जिस तरह हर सजीव के अस्तित्व को मिटाकर उसे अपने लपेटे में ले लेना चाहती है, कुँवर नारायण की कविता वहीं से आकार ग्रहण करती है और मनुष्यता और सजीवता के पक्ष में संभावनाओं के द्वार खोलती है । नयी कविता के दौर में, जब प्रबंधकाव्य का स्थान लंबी कविताएँ लेने लगीं, तब कुँवर नारायण ने 'आत्मजयी' जैसा प्रबंधकाव्य रचकर भरपूर प्रतिष्ठा प्राप्त की । उनकी कविताओं में व्यर्थ का उलझाव, अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध के बजाय संयम, परिष्कार और साफ-सुथरापन है । भाषा और विषय की विविधता उनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं । उनमें यथार्थ का खुरदुरापन भी मिलता है और उसका सहज सौंदर्य भी ।

तुरंत काटे गए एक वृक्ष के बहाने पर्यावरण, मनुष्य और सभ्यता के विनाश की अंतर्व्यथा को अभिव्यक्त करती यह कविता आज के समय की अपरिहार्य चिंताओं और संवेदनाओं का रचनात्मक अभिलेख है । यह कविता कुँवर नारायण के कविता संग्रह 'इन दिनों' से संकलित है ।

एक वृक्ष की हत्या

अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था–
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घर के दरवाजे पर तैनात ।

पुराने चमड़े का बना उसका शरीर
वही सख्त जान
झुर्रियोंदार खुरदुरा तना मैलाकुचैला,
राइफिल-सी एक सूखी डाल,
एक पगड़ी फूलपत्तीदार,
पाँवों में फटापुराना जूता,
चरमराता लेकिन अक्खड़ बल-बूता

धूप में बारिश में
गर्मी में सर्दी में
हमेशा चौकन्ना
अपनी खाकी वर्दी में

दूर से ही ललकारता, ''कौन ?''
मैं जवाब देता, ''दोस्त !''

और पल भर को बैठ जाता
उसकी ठंढी छाँव में

दरअसल शुरू से ही था हमारे अन्देशों में
कहीं एक जानी दुश्मन

कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है देश के दुश्मनों से

बचाना है –
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को जहर हो जाने से :

बचाना है – जंगल को मरुथल हो जाने से,
बचाना है – मनुष्य को जंगल हो जाने से ।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार क्यों लगता था ?
2. वृक्ष और कवि में क्या संवाद होता था ?
3. कविता का समापन करते हुए कवि अपने किन अंदेशों का जिक्र करता है और क्यों ?
4. घर, शहर और देश के बाद कवि किन चीजों को बचाने की बात करता है और क्यों ?
5. कविता की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए एक टिप्पणी लिखें ।
6. व्याख्या करें -

   (क) दूर से ही ललकारता, 'कौन ?' / मैं जवाब देता, 'दोस्त !'

   (ख) बचाना है – जंगल को मरुस्थल हो जाने से / बचाना है - मनुष्य को जंगल हो जाने से ।
7. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
8. इस कविता में एक रूपक की रचना हुई है । रूपक क्या है और यहाँ उसका क्या स्वरूप है ? स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. समकालीन कविता की किताबों से पर्यावरण से संबंधित रचनाएँ एकत्र कीजिए । इसमें पुस्तकालय की मदद लीजिए ।
2. कुँवर नारायण एक विचारशील कवि हैं । उन्होंने 'आत्मजयी' नाम से एक प्रबंधकाव्य लिखा है । उसकी कथा और विषय-वस्तु के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए तथा उसे उपलब्ध कर पढ़िए ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग करें –

   अबकी, हमेशा, लेकिन, दूर, दरअसल, कहीं
2. कविता से विशेषणों का चुनाव करते हुए उनके लिए स्वतंत्र विशेष्य पद दें ।
3. निम्नांकित संज्ञा पदों का प्रकार बताते हुए वाक्य-प्रयोग करें –

   घर, चौकीदार, दरवाजा, डाल, चमड़ा, पगड़ी, जूता, बल-बूता, बारिश, वर्दी, दोस्त, पल, छाँव, अन्देशा, नादिरों, जहर, मरुस्थल, जंगल
4. कविता में प्रयुक्त निम्नांकित पदों के कारक स्पष्ट करें –

   चमड़ा, पाँव, धूप, सर्दी, वर्दी, अन्देशा, शहर, नदी, खाना, मनुष्य

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

शब्द निधि

अक्खड़ : विपरीत परिस्थितियों में डटा रहने वाला

बल-बूता : शक्ति-सामर्थ्य

अन्देशा : आशंका

नादिरों : नादिरशाह नामक ऐतिहासिक लुटेरे और आक्रमणकारी की तरह के क्रूर व्यक्ति

वीरेन डंगवाल

प्रमुख समकालीन कवि वीरेन डंगवाल का जन्म 5 अगस्त 1947 ई० में कीर्तिनगर, टिहरी-गढ़वाल, उत्तरांचल में हुआ। मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, कानपुर, बरेली, नैनीताल में शुरुआती शिक्षा प्राप्त करने के बाद डंगवाल जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए० किया और यहीं से आधुनिक हिंदी कविता के मिथकों और प्रतीकों पर डी० लिट्० की उपाधि पायी। वे 1971 ई० से बरेली कॉलेज में अध्यापन करते रहे। डंगवाल जी हिंदी और अंग्रेजी में पत्रकारिता भी करते हैं। उन्होंने इलाहाबाद से प्रकाशित 'अमृत प्रभात' में कुछ वर्षों तक 'घूमता आईना' शीर्षक से स्तंभ लेखन भी किया। वे दैनिक 'अमर उजाला' के संपादकीय सलाहकार भी हैं।

कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में' आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साधारण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्राय: ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तद्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।

वीरेन डंगवाल को 'दुष्चक्र में स्रष्टा' काव्य संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। उन्हें 'इसी दुनिया में' पर रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार मिला। उन्हें श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार और कविता के लिए शमशेर सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। डंगवाल जी ने विपुल परिमाण में अनुवाद कार्य भी किए हैं। तुर्की के महाकवि नाजिम हिकमत की कविताओं के अनुवाद उन्होंने 'पहल पुस्तिका' के रूप में किया। उन्होंने विश्वकविता से पाब्लो नेरुदा, वर्तोल्त ब्रेख्त, वास्को पोपा, मीरोस्लाव होलुब, तदेऊष रूजेविच आदि की कविताओं के अलावा कुछ आदिवासी लोक कविताओं के भी अनुवाद किए।

समसामयिक कवि वीरेन डंगवाल की कविताओं के संकलन 'दुष्चक्र में स्रष्टा' से उनकी कविता 'हमारी नींद' यहाँ प्रस्तुत है। सुविधाभोगी आराम पसंद जीवन अथवा हमारी बेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए बढ़ते जानेवाले जीवन का चित्रण करती है यह कविता।

हमारी नींद

मेरी नींद के दौरान
कुछ इंच बढ़ गए पेड़
कुछ सूत पौधे
अंकुर ने अपने नाममात्र कोमल सींगों से
धकेलना शुरू की
बीज की फूली हुई
छत, भीतर से ।

एक मक्खी का जीवन-क्रम पूरा हुआ
कई शिशु पैदा हुए, और उनमें से
कई तो मारे भी गए
दंगे, आगजनी और बमबारी में ।

गरीब बस्तियों में भी
धमाके से हुआ देवी जागरण
लाउडस्पीकर पर ।

याने साधन तो सभी जुटा लिए हैं अत्याचारियों ने
मगर जीवन हठीला फिर भी
बढ़ता ही जाता आगे
हमारी नींद के बावजूद

और लोग भी हैं, कई लोग हैं
अभी भी
जो भूले नहीं करना
साफ और मजबूत
इनकार ।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के प्रथम अनुच्छेद में कवि एक बिम्ब की रचना करता है । उसे स्पष्ट कीजिए ।
2. मक्खी के जीवन-क्रम का कवि द्वारा उल्लेख किए जाने का क्या आशय है ?
3. कवि गरीब बस्तियों का क्यों उल्लेख करता है ?
4. कवि किन अत्याचारियों का और क्यों जिक्र करता है ?
5. इनकार करना न भूलने वाले कौन हैं ? कवि का भाव स्पष्ट कीजिए ।
6. कविता के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए ।
7. व्याख्या करें –

   (क) गरीब बस्तियों में भी
   धमाके से हुआ देवी जागरण
   लाउडस्पीकर पर ।

   (ख) याने साधन तो सभी जुटा लिए हैं अत्याचारियों ने

   (ग) हमारी नींद के बावजूद

8. कविता में एक शब्द भी ऐसा नहीं है जिसका अर्थ जानने की कोशिश करनी पड़े । यह कविता की भाषा की शक्ति है या सीमा ? स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. वीरेन डंगवाल का कविता संग्रह 'दुष्चक्र में स्रष्टा' अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें तथा यह जानने का प्रयत्न करें कि कवि ने अपने संग्रह का नाम यह क्यों रखा ?
2. आप वीरेन डंगवाल की तुलना उनके समकालीन बिहार के किन कवियों से करेंगे और क्यों ?

भाषा की बात

1. निम्नांकित के दो-दो समानार्थी शब्द लिखें –

पेड़, शिशु, दंगा, गरीब, अत्याचारी, हठीला, साफ, इनकार

2. निम्नांकित वाक्यों में कर्ता कारक बताएँ –

(क) मेरी नींद के दौरान / कुछ इंच बढ़ गए / कुछ सूत पौधे ।

(ख) अंकुर ने अपने नाममात्र कोमल सींगों से / धकेलना शुरू की / बीज की फूली हुई / छत भीतर से ।

(ग) गरीब बस्तियों में भी / धमाके से हुआ देवी जागरण / लाउडस्पीकर पर ।

(घ) मगर जीवन हठीला फिर भी / बढ़ता ही जाता आगे / हमारी नींद के बावजूद ।

3. निम्नलिखित वाक्यों में कर्म कारक की पहचान कीजिए –

(क) अंकुर ने अपने नाममात्र कोमल सींगों से / धकेलना शुरू की / बीज की फूली हुई / छत भीतर से ।

(ख) कई लोग हैं / अभी भी / जो भूले नहीं करना / साफ और मजबूत / इनकार ।

X X X

अनामिका

समकालीन हिंदी कविता में अपनी एक अलग पहचान रखनेवाली कवयित्री अनामिका का जन्म 17 अगस्त 1961 ई० में मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ। उनके पिता श्यामनंदन किशोर हिंदी के गीतकार और बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। अनामिका ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम० ए० किया और वहीं से पीएच० डी० की उपाधि पायी। सम्प्रति, वे सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापिका हैं। अनामिका कविता और गद्य लेखन में एकसाथ सक्रिय हैं। वे हिंदी और अंग्रेजी दोनों में लिखती हैं। उनकी रचनाएँ हैं – काव्य संकलन : 'गलत पते की चिट्ठी', 'बीजाक्षर', 'अनुष्टुप' आदि; आलोचना : 'पोस्ट-एलिएट पोएट्री', 'स्त्रीत्व का मानचित्र' आदि। संपादन : 'कहती हैं औरतें' (काव्य संकलन)। अनामिका को राष्ट्रभाषा परिषद् पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, गिरिजा कुमार माथुर पुरस्कार, ऋतुराज साहित्यकार सम्मान आदि प्राप्त हो चुके हैं।

एक कवयित्री और लेखिका के रूप में अनामिका अपने वस्तुपरक समसामयिक बोध और संघर्षशील वंचित जन के प्रति रचनात्मक सहानुभूति के लिए जानी जाती हैं। स्त्री विमर्श में सार्थक हस्तक्षेप करने वाली अनामिका अपनी टिप्पणियों के लिए भी उल्लेखनीय हैं।

प्रस्तुत कविता समसामयिक कवियों की चुनी गई कविताओं की चर्चित शृंखला 'कवि ने कहा' से यहाँ ली गयी है। प्रस्तुत कविता में बच्चों के अक्षर-ज्ञान की प्रारंभिक शिक्षण-प्रक्रिया के कौतुकपूर्ण वर्णन-चित्रण द्वारा कवयित्री गंभीर आशय व्यक्त कर देती हैं।

अक्षर-ज्ञान

चौखटे में नहीं अँटता
बेटे का 'क'
कबूतर ही है न –
फुदक जाता है जरा-सा !
पंक्ति से उतर जाता है
उसका 'ख'
खरगोश की खालिस बेचैनी में !
गमले-सा टूटता हुआ उसका 'ग'
घड़े-सा लुढ़कता हुआ उसका 'घ'
'ङ' पर आकर थमक जाता है
उससे नहीं सधता है 'ङ' ।
'ङ' के 'ड' को वह समझता है 'माँ'
और उसके बगल के बिंदु (·) को मानता है
गोदी में बैठा 'बेटा'

माँ-बेटे सधते नहीं उससे
और उन्हें लिख लेने की
अनवरत कोशिश में
उसके आ जाते हैं आँसू ।
पहली विफलता पर छलके ये आँसू ही
हैं शायद प्रथमाक्षर
सृष्टि की विकास-कथा के ।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता में तीन उपस्थितियाँ हैं । स्पष्ट करें कि वे कौन-कौन सी हैं ?
2. कविता में 'क' का विवरण स्पष्ट कीजिए ।
3. खालिस बेचैनी किसकी है ? बेचैनी का क्या अभिप्राय है ?
4. बेटे के लिए 'ङ' क्या है और क्यों ?
5. बेटे के आँसू कब आते हैं और क्यों ?
6. कविता के अंत में कवयित्री 'शायद' अव्यय का क्यों प्रयोग करती हैं ? स्पष्ट कीजिए ।
7. कविता किस तरह एक सांत्वना और आशा जगाती है ? विचार करें ।
8. व्याख्या करें -

   ''गमले-सा टूटता हुआ उसका 'ग'
   घड़े-सा लुढ़कता हुआ उसका 'घ' ''

कविता के आस-पास

1. कवयित्री बिहार की हैं । शिक्षक की सहायता से बिहार की अन्य समसामयिक कवयित्रियों की सूची तैयार करें ।
2. अपने संपर्क के किसी एक शिशु को अक्षर-ज्ञान कराएँ और उस दौरान के अपने अनुभव के आधार पर एक टिप्पणी लिखें ।

भाषा की बात

1. निम्नांकित भिन्नार्थक शब्दों के वाक्य-प्रयोग करते हुए अर्थ स्पष्ट करें -

   चौखटा-चोखट, बेटा-बाट, खालिस-खलासी-खलिश, थमना-थमकना-थामना, सधना-साधना-साध, गोदी-गद्दी-गाद, कोशिश-कशिश, विफलता-विकलता
2. कविता में प्रयुक्त क्रियापदों का चयन करते हुए उनसे स्वतंत्र वाक्य बनाएँ ।
3. निम्नांकित के विपरीतार्थक शब्द दें -

   बेटा, कबूतर, माँ, उतरना, टूटना, बेचैनी, अनवरत, आँसू, विफलता, प्रथमाक्षर, विकास-कथा, सृष्टि

जीवनानंद दास

बाँग्ला के सर्वाधिक सम्मानित एवं चर्चित कवियों में से एक जीवनानंद दास का जन्म 1899 ई० में हुआ था । रवीन्द्रनाथ के बाद बाँग्ला साहित्य में आधुनिक काव्यांदोलन को जिन लोगों ने योग्य नेतृत्व प्रदान किया था, उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली एवं मौलिक कवि जीवनानंद दास ही हैं । इन कवियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती के रूप में था रवीन्द्रनाथ का स्वच्छंदतावादी काव्य । स्वच्छंदतावाद से अलग हटकर कविता की नई यथार्थवादी भूमि तलाश करना सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था । इस कार्य में अग्रणी भूमिका जीवनानंद दास की रही । उन्होंने बंगाल के जीवन में रच-बसकर उसकी जड़ों को पहचाना और उसे अपनी कविता में स्वर दिया । उन्होंने भाषा, भाव एवं दृष्टिकोण में नई शैली, सोच एवं जीवनदृष्टि को प्रतिष्ठित किया ।

सिर्फ पचपन साल की उम्र में जीवनानंद दास का निधन एक मर्मांतक दुर्घटना में हुआ, सन् 1954 में । तब तक उनके सिर्फ छह काव्य संकलन प्रकाशित हुए थे - 'झरा पालक', 'धूसर पांडुलिपि', 'वनलता सेन', 'महापृथिवी', 'सातटि तारार तिमिर' और 'जीवनानंद दासेर श्रेष्ठ कविता' । उनके अन्य काव्य संकलन 'रूपसी बाँग्ला', 'बेला अबेला कालबेला', 'मनविहंगम' और 'आलोक पृथिवी' निधन के बाद प्रकाशित हुए । उनके निधन के बाद लगभग एक सौ कहानियाँ ओर तेरह उपन्यास भी प्रकाशित किए गये ।

'वनलता सेन' काव्यग्रंथ की 'वनलता सेन' शीर्षक कविता को प्रबुद्ध आलोचकों द्वारा रवींद्रोत्तर युग की श्रेष्ठतम प्रेम कविता की संज्ञा दी गयी है । वस्तुतः यह कविता बहुआयामी भाव-व्यंजना का उत्कृष्ट उदाहरण है । निखिल बंग रवींद्र साहित्य सम्मेलन के द्वारा 'वनलता सेन' को 1952 ई० में श्रेष्ठ काव्यग्रंथ का पुरस्कार दिया गया था ।

यहाँ समकालीन हिंदी कवि **प्रयाग शुक्ल** द्वारा भाषांतरित जीवनानंद दास की कविता प्रस्तुत है । यह कवि की अत्यंत लोकप्रिय और बहुप्रचारित कविता है । कविता में कवि का अपनी मातृभूमि तथा परिवेश से उत्कट प्रेम अभिव्यक्त होता है । बंगाल अपने नैसर्गिक सम्मोहन के साथ चुनिंदा चित्रों में सांकेतिक रूप से कविता में विन्यस्त है । इस नश्वर जीवन के बाद भी इसी बंगाल में एक बार फिर आने की लालसा मातृभूमि के प्रति कवि के प्रेम की एक मोहक भंगिमा के रूप में सामने आती है ।

लौटकर आऊँगा फिर

खेत हैं जहाँ धान के, बहती नदी
के किनारे फिर आऊँगा लौट कर
एक दिन–बंगाल में; नहीं शायद
होऊँगा मनुष्य तब, होऊँगा अबाबील
या फिर कौवा उस भोर का–फूटेगा नयी
धान की फसल पर जो
कुहरे के पालने से कटहल की छाया तक
भरता पेंग, आऊँगा एक दिन !
बन कर शायद हंस मैं किसी किशोरी का;
घुँघरू लाल पैरों में;
तैरता रहूँगा बस दिन-दिन भर पानी में–
गंध जहाँ होगी ही भरी, घास की ।
आऊँगा मैं । नदियाँ, मैदान बंगाल के बुलायेंगे–
मैं आऊँगा । जिसे नदी धोती ही रहती है पानी
से–इसी हरे सजल किनारे पर ।

शायद तुम देखोगे शाम की हवा के साथ उड़ते एक उल्लू को
शायद तुम सुनोगे कपास के पेड़ पर उसकी बोली
घासीली जमीन पर फेंकेगा मुट्ठी भर-भर चावल
शायद कोई बच्चा – उबले हुए !
देखोगे, रूपसा के गंदले-से पानी में
नाव लिए जाते एक लड़के को–उड़ते फटे
पाल की नाव !
लौटते होंगे रंगीन बादलों के बीच, सारस
अँधेरे में होऊँगा मैं उन्हीं के बीच में
देखना !

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि किस तरह के बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करता है ?
2. कवि अगले जीवन में क्या-क्या बनने की संभावना व्यक्त करता है और क्यों ?
3. अगले जन्मों में बंगाल में आने की क्या सिर्फ कवि की इच्छा है ? स्पष्ट कीजिए ।
4. कवि किनके बीच अँधेरे में होने की बात करता है ? आशय स्पष्ट कीजिए ।
5. कविता की चित्रात्मकता पर प्रकाश डालिए ।
6. कविता में आए बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ।
7. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
8. कवि अगले जन्म में अपने मनुष्य होने में क्यों संदेह करता है ? क्या कारण हो सकता है ?
9. व्याख्या करें –

   (क) ''बनकर शायद हंस मैं किसी किशोरी का;
   घुँघरू लाल पैरों में;
   तैरता रहूँगा बस दिन-दिन भर पानी में –
   गंध जहाँ होगी ही भरी, घास की ।''

   (ख) ''खेत हैं जहाँ धान के, बहती नदी
   के किनारे फिर आऊँगा लौट कर
   एक दिन – बंगाल में;''

कविता के आस-पास

1. कवि की इस कविता में मातृभूमि के प्रति उसका प्रेम दिखाई पड़ता है । ऐसी एक कविता वर्ग 11 की पाठ्यपुस्तक 'दिगंत भाग-1' में है 'मातृभूमि' । दोनों कविताओं की तुलना करते हुए एक टिप्पणी लिखिए ।
2. आपने इस दृष्टि से कभी अपनी मातृभूमि को देखा है ? अपनी मातृभूमि की सुंदरता पर विचार करते हुए स्पष्ट करें कि आप अगले जन्म में क्या चाहते हैं और क्यों ?

भाषा की बात

1. निम्नांकित शब्दों के लिंग-परिवर्तन करें । लिंग-परिवर्तन में आवश्यकता पड़ने पर समानार्थी शब्दों के भी प्रयोग करें –

   नदी, कौआ, भोर, नयी, हंस, किशोरी, हवा, बच्चा, बादल, सारस

2. कविता से विशेषण चुनें और उनके लिए स्वतंत्र विशेष्य पद दें ।
3. कविता में प्रयुक्त सर्वनाम चुनें और उनका प्रकार भी बताएँ ।

शब्द निधि

अबाबील : एक प्रसिद्ध काली छोटी चिड़िया जो उजाड़ मकानों में रहती है, भांडकी
पेंग : झूले का दोलन
रूपसा : बंगाल की नदी विशेष
सारस : पक्षी विशेष, क्रौंच

❑❑❑

रेनर मारिया रिल्के

रेनर मारिया रिल्के का जन्म 4 दिसंबर 1875 ई० में प्राग, ऑस्ट्रिया (अब जर्मनी) में हुआ था । इनके पिता का नाम जोसेफ रिल्के और माता का नाम सोफिया था । इनकी शिक्षा-दीक्षा अनेक बाधाओं को पार करते हुए हुई । इन्होंने प्राग और म्यूनिख विश्वविद्यालयों में शिक्षा पायी । कला और साहित्य में आरंभ से ही इनकी गहरी अभिरुचि थी । संगीत, सिनेमा आदि अनेक कलाओं में इनकी गहरी पैठ थी । कविता के अतिरिक्त इन्होंने गद्य भी पर्याप्त लिखा । इनका एक उपन्यास 'द नोटबुक ऑफ माल्टे लॉरिड्स ब्रिज' और 'टेल्स ऑफ आलमाइटी' कहानी संग्रह प्रसिद्ध हैं । इनके प्रमुख कविता संकलन हैं - 'लाइफ एण्ड सोंग्स', 'लॉरेंस सेक्रिफाइस', 'एडवेन्ट' आदि । इनका निधन 29 दिसंबर 1926 ई० में हुआ ।

रिल्के का रचनात्मक अवदान बहुत बड़ा है । इन्होंने आधुनिक यूरोप के साहित्य को अपने गहरे भावबोध तथा संवेदनात्मक भाषा और शिल्प से काफी प्रभावित किया । इनकी काव्य शैली गीतात्मक है और भावबोध में रहस्योन्मुखता है ।

प्रसिद्ध हिंदी कवि **धर्मवीर भारती** द्वारा भाषांतरित इस महान जर्मन कवि की कविता यहाँ प्रस्तुत है । यह कविता विश्व कविता के भाषांतरित संकलन 'देशांतर' से ली गयी है । रिल्के का आधुनिक विश्व कविता पर प्रभाव बताया जाता है । रिल्के मर्मी इसाई कवियों जैसी पवित्र आस्था के आस्तिक कवि थे, जिनकी कविता में रहस्यवाद के आधुनिक स्वर सुने जाते हैं । प्रस्तुत कविता इस तथ्य की एक दुर्लभ साखी पेश करती है । बिना भक्त के भगवान भी एकाकी और निरुपाय हैं । उनकी भगवत्ता भी भक्त की सत्ता पर ही निर्भर करती है । व्यक्ति और विराट सत्य एक-दूसरे पर निर्भर हैं । प्रेम के धरातल पर अत्यंत पावनतापूर्वक यह कविता इस सत्य को अभिव्यक्त करती है ।

मेरे बिना तुम प्रभु

जब मेरा अस्तित्व न रहेगा, प्रभु, तब तुम क्या करोगे ?
जब मैं – तुम्हारा जलपात्र, टूटकर बिखर जाऊँगा ?
जब मैं तुम्हारी मदिरा सूख जाऊँगा या स्वादहीन हो जाऊँगा ?

मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ
मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोगे ?

मेरे बिना तुम गृहहीन निर्वासित होगे, स्वागत-विहीन
मैं तुम्हारी पादुका हूँ, मेरे बिना तुम्हारे
चरणों में छाले पड़ जाएँगे, वे भटकेंगे लहूलुहान !

तुम्हारा शानदार लबादा गिर जाएगा
तुम्हारी कृपादृष्टि जो कभी मेरे कपोलों की
नर्म शय्या पर विश्राम करती थी
निराश होकर वह सुख खोजेगी
जो मैं उसे देता था –
दूर की चट्टानों की ठंढी गोद में
सूर्यास्त के रंगों में घुलने का सुख

प्रभु, प्रभु मुझे आशंका होती है
मेरे बिना तुम क्या करोगे ?

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि अपने को जलपात्र और मदिरा क्यों कहता है ?
2. आशय स्पष्ट कीजिए -

   "मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ
   मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोगे ?"

3. शानदार लबादा किसका गिर जाएगा और क्यों ?
4. कवि किसको कैसा सुख देता था ?
5. कवि को किस बात की आशंका है ? स्पष्ट कीजिए ।
6. कविता किसके द्वारा किसे संबोधित है ? आप क्या सोचते हैं ?
7. मनुष्य के नश्वर जीवन की महिमा और गौरव का यह कविता कैसे बखान करती है ? स्पष्ट की
8. कविता के आधार पर भक्त और भगवान के बीच के संबंध पर प्रकाश डालिए ।

कविता के आस-पास

1. पुस्तकालय से रवीन्द्रनाथ की 'गीतांजलि' का हिंदी अनुवाद खोजकर पढ़ें और रिल्के तथा रवीन्
   में समानता के सूत्र खोजिए ।
2. हिंदी में 'रिल्के के पत्र' प्रकाशित हैं । उन्हें पढ़ें ।
3. रिल्के के बारे में विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र कीजिए और उसे लेख के रूप में प्रस्तुत की

भाषा की बात

1. कविता से तत्सम शब्दों का चयन करें एवं उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करें ।
2. कविता में प्रयुक्त क्रियाओं का स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करें ।
3. कविता से अव्यय पद चुनें ।
4. कविता के विशेष्य पदों को चिह्नित करें ।

शब्द निधि

जलपात्र : पानी रखने का बर्तन
वृत्ति : प्रवृत्ति, कर्म-स्वभाव
निर्वासित : बेघर
पादुका : चप्पल, जूते, खड़ाऊँ आदि
लबादा : चोगा
कपोल : गाल
शय्या : बिस्तर